गिरनार

2019

भाकृअनुप-मूँगफली अनुसंधान निदेशालय

इवनगर रॉड, पोस्ट बोक्स नं. 5, जूनागढ़ 362 001, गुजरात, भारत

भाकृअनुप
ICAR

डीजीआर
DGR

भाकृअनुप - मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

गिरनार

अंक: 6 - 2019

प्रकाशक:
डॉ. राधाकृष्णन टी., निदेशक
दूरभाष: +91 285 2673041
फैक्स: +91 285 2672550
ईमेल: director@dgr.org.in
वैबसाइट: www.dgr.org.in

संपादक :
महेश कुमार महात्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक

मुद्रक:
आर्ट इन्डिया ऑफसेट
जूनागढ - 362 001

विषय–सूची

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
• मूँगफली में खरपतवार नियंत्रण	राजा राम चौधरी, किरण कुमार रेड्डी, अमन वर्मा एवं प्रताप सिंह झाला	01
• कन्फेक्शनरी मूँगफली - महत्व एवं उन्नत किस्में	प्रवीण कोना, नरेन्द्र कुमार, गंगाधर के., एस. के. बेरा एवं महेश कुमार महात्मा	03
• मूँगफली के कीट प्रबंधन में पक्षियों की भूमिका	हरीश जी. एवं राम दत्ता	07
• मूँगफली में पाए जाने वाले पोषण विरोधी कारक एवं उनका स्वास्थ्य पर प्रभाव	अमन वर्मा, लोकेश कुमार थवाईत, सुष्मिता सिंह, राजा राम चौधरी एवं महेश कुमार महात्मा	08
• फसल अवशेष प्रबंधन का पर्यावरण एवं मिट्टी की गुणवत्ता के साथ फसल पैदावार पर प्रभाव	हरनारायण मीना, सुशील कुमार सिंह एवं मोहर सिंह मीना	12
• खेती में उत्पादन को बढ़ाएँ व लागत खर्च को कम करें	राजेंद्र नागर, बलवीर सिंह, शौकत अली एवं राजवीर	16
• संरक्षित खेती में कीट प्रबंधन	अभिषेक शुक्ला	18
• अधिक आय के लिये : फसलों का चुनाव एवं कटाई उपरांत तकनीकियाँ	महेश कुमार महात्मा, लोकेश कुमार थवाईत, अमन वर्मा, सुष्मिता	23
• पादप प्रजनन में नवोन्मेष की वैश्विक जरूरत	अभय कुमार, प्रतिभा सिह, कमलेश कान्त नूतन, भागवत नवाडे	25
• आम की वर्षा-पोषित बागवानी के लिए कृषि तकनीक	दीपा सामंत एवं कुंदन किशोर	29
• सहजन: एक बहुउपयोगी एवं लाभकारी वृक्ष	कविता, संगीता कुमारी, विनोद कुमार	32
• सूत्रकृमि: फसलों के छिपेशत्रु	रूपक जेना, हरीश जी, अनंत कुरेल्ला तथा राजा राम चौधरी	39
• कार्बन डाईऑक्साईड में वृद्धि : कृषि के लिए वरदान या अभिशाप	सुष्मिता सिंह, अमन वर्मा एवं अनुज सिंह	41
• एक कृषि वैज्ञानिक का यूं चले जाना	एम. के. यादव	44
• कविता (यादें)	एम. के. यादव	45
• कविता (मैं तेरी हूं, तू मेरा है)	ललित महात्मा	46
• कविता (स्त्री)	सुमन विष्ठ	46
• राजभाषा गतिविधियाँ	रणवीर सिंह एवं इन्द्रराज मीना	47

डिस्क्लेमर

प्रस्तुत लेखों में व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों के लिये लेखक स्वयं उत्तरदायी है। उनसे मूँगफली अनुसंधान निदेशालय एवं प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है ।

अधिक आय के लिये : फसलों का चुनाव एवं कटाई उपरांत तकनीकियाँ

महेश कुमार महात्मा, लोकेश कुमार थवाईत, अमन वर्मा, सुष्मिता, प्रवीण कोना
भाकृअनुप - मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ, गुजरात - 362001

देश की राष्ट्रीय आय का 14.4 % हिस्सा (सकल मूल्य वर्धित या ग्रास वैल्यू ऐडेड (GVA)) कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों से प्राप्त होता है (इकोनोमिक सर्वे-2018-19)। आज भी देश की 43 प्रतिशत जन सँख्या रोजगार के लिये कृषि एवं संबन्धित व्यवसाय पर निर्भर है (https://data.worldbank.org/)। भारत विश्व में दूध, दलहन एवं जूट उत्पादन में प्रथम स्थान पर है तथा चावल, गेहूँ, गन्ना, कपास, मूँगफली, सब्जियां एवं फल उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। फिर भी हमारे देश में कटाई उपरांत प्रोद्योगिकियों का अनुसरण एवं विकास बहुत कम हुआ है जिसके कारण बहुत सारे जल्दी खराब होने वाले कृषि उत्पाद बिगड़ जाते है जिससे किसानों को भारी नुकसान होता है अथवा अपनी उपज को कम दामों पर बेंचना पड़ता है। उपयुक्त भण्डारण एवं परिवहन के आभाव में प्रतिवर्ष लगभग 92,651 करोड़ रुपयों का नुकसान होता है। फल एवं सब्जियों का 30-40 प्रतिशत उत्पादन भण्डारण एवं खाद्य प्रसंस्करण(प्रोसेसिंग) के अभाव के कारण नष्ट हो जाता है ।यदि खाद्य प्रसंस्करण की समुचित व्यवस्था उपलब्ध होतो कृषि उत्पाद के मूल्य संवर्द्धन के साथ ही रोजगार की संभावनाएँ भी बढ़ जाती है।खेती में फसलों के चयन एवं बाजार में माँग के अनुसार बुवाई करने पर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। बागवानी फसलों जैसेकि: सब्जियाँ, फलों एवं फूलों कि खेती से प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक उत्पादन एवं आय प्रप्त कि जा सकती है। बागवानी फसलों का प्रसंस्करण एवं व परिरक्षण करके इनसे कई गुना अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

निम्नलिखित प्रकार की फसलों की खेती से अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

नकदी फसलें:

वे फसलें जिनकी बाजार में अधिक माँग हो तथा आमदनी के लिये सीधे बाजार में बेंचा जाता हो जैसे: कपास,गन्ना, तम्बाकू, जूट, तिलहन फसलें जैसे सरसों, मूँगफली, अरण्डी, अलसी आदि।धान्य फसलों की अपेक्षा इनसे अधिक आय प्राप्त होती है।

बागवानी फसलें:

बागवानी फसलों में सब्जियाँ, फल एवं फूलों की खेती की जाती है।बागवानी फसलों का चुनाव क्षेत्र विशेष की जलवायु, मृदा तथा बाजार माँग के अनुसार करना चाहिए। लंबे समय तक खराब नहीं होने वाली सब्जियों, फलों एवं फूलों को देश के अन्य क्षेत्रों एवं विदेशों में भी निर्यात किया जा सकता है। सब्जियाँ एवं फूल अन्य फसलों की अपेक्षा प्रति इकाई क्षेत्र से कम समय में अधिक पैदावार देते है। इसके अतिरिक्त प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध हो जाता है। चूँकि फल, फूल व सब्जियों की खेती से प्राप्त होने वाले उत्पादों की तुड़ाई, कटाई, छंटाई श्रेणीकरण, पैकिंग से लेकर विपणन तक के अधिकतर कार्यों में मानव श्रम की आवश्यकता अधिक होती है।

औषधीय एवं सुगंधीय पौधों की खेती:

तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ, सतावरी, ब्राह्मी, ग्वारपाठा, सफ़ेद मुसली, ईसबगोल,लेमनग्रास, स्टीविया, हल्दी एवं अदरक आदि की फसलों की खेती से भी प्रति इकाई अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

रोजगार मिलने के साथ-साथ फलों, फूलों व सब्जियों की छंटाई, श्रेणीकरण पैकिंग आदि से इन उत्पादों की गुणवत्ता को बढ़ाकर अधिकतम लाभ भी कमाया जा सकता है।

कृषि उत्पादों का कटाई उपरांत तकनीकियों से मूल्य संवर्धन:

फसलों से प्राप्त उत्पादों के प्रसंस्करण एवं परिरक्षण से उनका मूल्य संवर्धन किया जा सकता है। मूल्य संवर्धन के साथ ही लघु एवं कुटीर उद्योगों से रोजगार के अवसरों का भी सृजन होता है। निम्नलिखित तालिका में विभिन्न फसलों के मूल्य संवर्धित उत्पादों को दिया गया है।

उपरोक्त तालिका के अलावा भी बहुत सारी फसलों में कटाई उपरांत मूल्य संवर्धन किया जा सकता है।इस प्रकार मूल्य संवर्धन द्वारा कमपूँजी लगाकर आय में बढ़ोतरी की जा सकती है तथा स्वरोजगार के साथ ही साथ अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान किया जा सकता है। क्योंकि खाद्य

तालिका: फसलों के मूल्य संवर्धित उत्पाद

क्र.सं	फसल	मूल्य संवर्धित उत्पाद
1	कपास	रुईएवं कपास के बीज
2	गन्ना	गुड़
3	मूँगफली	भुने हुए नमकीन दानें, भुजिया, चिक्की, बर्फी, चोकलेट दूध, बटर, तेल
4	सोयाबीन	दूध, बटर, पनीर, तेल, सोयाबीन बड़ी, नमकीन
5	आलू	विभिन्न प्रकार के वेफर्स, चिप्स
6	अमरुद	शर्बत, जैम, जेली, केंडी
7	केला	वेफर्स
8	निम्बू	शर्बत, अचार
9	आम	शर्बत, अचार, जैम, आम पापड
10	अनार	शर्बत, अनार दाना
11	एपल	शर्बत, जैम, जेली
12	आँवला	शर्बत, आचार, मुरब्बा, केंडी, मुखवास, च्यवनप्राश
13	सीताफल	सीताफल रबड़ी, आइसक्रीम
14	गुलाब	गुलाब जल, इत्र, गुलकंद, माला, बुके
15	मोगरा	इत्र, माला, बुके
16	ग्वारपाठा	जेल, शर्बत

प्रसंस्करण उद्योग ज्यादातर श्रम आधारित होते है। फसल उत्पादों के मूल्य संवर्धन हेतु जानकारी प्राप्त करने के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों जैसे: कटाई उपरान्त प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना; केन्द्रीय कृषि अभियंत्रण संस्थान, भोपाल; भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; केन्द्रीय आलू अनुसन्धान संस्थान, शिमला; मूँगफली अनुसन्धान निदेशालय, जूनागढ़; भारतीय गन्ना अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ; भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इन्दौर; भारतीयबागवानी अनुसन्धान संस्थान, बेंगलौर से संपर्क किया जा सकता है।

फसलउपज की ग्रेडिंग एवं विपणन

किसानों को फसलों की उपज के पश्चात ग्रेडिंग करके बेचना चाहिए जिससे अधिक आमदनी मिल सकती है । लघु एवं सीमांत किसान मौसमी सब्जियों के साथ पत्तीदार सब्जियों जैसेकि: धनिया, पालक एवं मेथी की भी थोड़ी खेती करे तथा अपने ही परिवार या दैनिक मजदूर द्वारा बेचा जाये तो भी अधिक आय प्राप्त की जा सकती है इससे उपभोक्ता एवं किसान के बीच सीधा संपर्क होगा जिससे बिचोलिये को लाभ नहीं मिलेगा।

निष्कर्ष:

भारत में कटाई उपरांत प्रद्योगिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में व्यापक संभवनाएं हैं जिससे देश में रोजगार के भी अवसर उपलब्ध होंगे तथा निर्धारित गुणवत्ता मानकों के अनुसार तैयार किये गये खाध्य पदार्थों के निर्यात से विदेशी मुद्रा भंडार भी बढ़ेगा। इसके अलावा परिरक्षित फलों व सब्जियों को उचित दामों पर वर्ष भर बाजार में उपलब्ध कराया जा सकता है।